भारतीय सिनेमा में महिलाओं का चित्रण

नेहा खंतवाल

शोध विद्यार्थी

गलगोटियास विश्वविद्यालय

सारांश

देश की जनसंख्या में महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा है जो पर्दे पर इनके चित्रण पर आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस लेख में महिलाओं और सिनेमा के बीच के संबंध की जांच करने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा इसमें 1947 से 2023 तक की कुछ महिला चत्रित चुनिंदा फिल्मों को मुख्य केंद्र बिंदु के रूप में प्रदर्शित किया गया है।

हिंदी सिनेमा में फिल्मों का आनंद लेता हर कोई नजर आ जाता है लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि बडे पैमाने में सिनेमा ने देश के सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों को आकार दिया है। सिनेमा में महिलाओं के चित्रण ने समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक माहौल पर गहरा प्रभाव डाला है। सिनेमा महिलाओं से संबंधित विभिन्न प्रसांगिक प्रश्नों को पूछता है जैसे पुरूषों के मुकाबले महिलाओं का सिनेमा में कैसा चित्रण किया जाता है, सिनेमा में महिलाओं के मुद्दे को कैसे लिया जाता है और चरित्र और महिलाओं को समाज के सामने अलग-अलग दृष्टिकोण से कैसे देखा जाता है।

भारतीय सिनेमा में कई चीजें देखने को मिली है जिसमें महिलाओं को एक अबला नारी से सशक्त रूप में चित्रित किया गया है। यह लेख महिलाओं के चरित्र से लेकर महिलाओं के सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को दर्शाता है। इसके अलावा सिनेमा में महिलाओं के योगदान को परस्पर चित्रित करता है।

कुंजी शब्द- फिल्में, नायिका, निर्देशक, चित्रण, सिनेमा

हिंदी सिनेमा का इतिहास

1931 से पहले फिल्मों में आवाज नहीं होती थी। दादा साहब फाल्के द्वारा निर्देशित बॉलीवुड की पहली फिल्म सन् 1913 में रिलीज हुई थी जिसका नाम राजा हरिशचंद्र था। अर्देशिर ईरानी ने फिल्म आलम आरा में ही सबसे पहले ध्वनि की शुरूआत की थी। इस दौरान भारतीय सिनेमा पहले से ही प्रतिवर्ष 200 फिल्मों का निर्माण कर रहा था। 1940 के दशक में द्वितीय विश्व युद्ध के कारण बॉलीबुड फिल्मों को जबरदस्त नुकसान हुआ। 1950 में व्यव्सायिक रूप से रंगीन फिल्में लोकप्रिय हो गई। इस अवधि में हिंदी फिल्मों में एक नए युग की शुरूआत हुई। फिल्मों में अब संवाद और गानों के अलावा

जबरदस्त रोमांस भी था। इस दशक में प्रसिद्ध और महान अभिनेता और अभिनेत्रियों जैसे दिलीप कुमार, नरगिस, नूतन, राज कपूर आदि का भी उदय हुआ। 1960 के दशक में सॉफ्ट डाँस की शुरूआत हुई। गायन के साथ-साथ विदेशी लोकेश्नस पर फिल्मों की शूटिंग की शुरूआत भी हुई।

फिल्मों में महिलाओं की बदलती छवि-

सिनेमा का अर्थ है मनोरंजन करना और लोगों को एक ऐसी दुनिया में ले जाना जो वास्तविकता से बिल्कुल अलग है। यह लोगों को दुनियाभर की चिंताओं से मुक्ति प्रदान करती है। सिनेमा एक लोकप्रिय साधन है जो लोगों के विचारों, प्रतिक्रियाओं और छवियों के निर्माण करने में भूमिका अदा करती है। यह शोध पत्र महिलाओं के भारतीय सिनेमा में चित्रण से संबंधित है। यदि नारीवाद के विषय में चर्चा की जाए तो सिनेमा में बनने वाली सभी फिल्में पुरुष दृष्टिकोण से बनी होती हैं। मीडिया, लिंग और सिनेमा की चर्चा आजकल हर जगह हो रही है। मीडिया महिलाओं के चित्रण में मुख्य भूमिका को अदा करता है। मीडिया इस प्रकार छानबीन और पेश करता है जो महिलाओं के चित्रण को करने के लिए काफी है।

हिंदी सिनेमा ने भारतीय संस्कृति के लिए संदर्भ बिंदु रहा है। भारत के बदलते स्वरूप को इसने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है जैसे किसी भी पूर्ववर्ती कला ने नहीं किया है। भारतीय सिनेमा और मनोरंजन एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं। हिंदी सिनेमा ने संस्कृति को बढ़ावा देने का एक ऐसा मार्ग खोला है जिससे समाज में एक नई सोच का उद्भव किया है। इसने हमारी संस्कृति, कला, रीति-रिवाजों, मूल्यों और प्रतिमानों को एक गहरी सोच प्रदान की है।

सिनेमा संचार करने का एक सशक्त माध्यम है और 12 मिलियन लोग प्रतिदिन सिनेमाघरों में फिल्में देखने के लिए जाते हैं। सिनेमा भारत में मनोरंजन करने का एक प्रमुख साधन है। प्रतिवर्ष कई महिलाएँ फिल्म इंडस्ट्री में अपने कैरियर को बनाने के लिए मुंबई जैसे शहर में आती हैं। साथ ही यहाँ कैरियर बना चुकी महिलाओं में से कुछ डाँसर हैं तो कुछ अभिनेत्रियाँ, कुछ कौरियोग्राफर हैं तो कुछ गायिका। हाल ही के वर्षों में सिनेमा जगत में इतना परिवर्तन आया है कि महिलाएँ डिजाइनर, कौरियोग्राफर से लेकर संपादक और पटकथा लेखक के रूप में अपना कैरियर बना रही हैं लेकिन पुरूषों के मुकाबले महिलाओं का आँकड़ा अभी भी कम ही आँका गया है।

इस प्रकार फिल्म जगत में पर्दे के पीछे काम करने वाली महिलाओं की संख्या बहुत कम है। इतनी कम संख्या के आंकलन के बाद यह कह सकते हैं कि सिनेमा में महिलाओं का चित्रण पुरूष करते हैं। महिलाएँ पर्दे पर क्या भूमिका निभाती यह महिला पर नहीं बल्कि पुरूष निर्देशक पर निर्भर करता है। निर्देशक के लिए सबसे ज्यादा जरूरी हैं दर्शक। दर्शकों के मूल्यों, विश्वासों और दृष्टिकोणों के अनुरूप ही फिल्मों को पेश किया जाता है। निर्देशक ऐसी फिल्मों का निर्माण करते हैं जो दर्शकों की पसंद का तो ध्यान रखती ही हैं साथ ही उनके लाभ मार्जिन की भी पूर्ति करती है।

भारतीय सिनेमा का बदलता स्वरूप और महिलाओं की सामाजिक-सांस्कृतिक चित्रण-

भारतीय सिनेमा में महिलाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक चित्रण की बात की जाए तो 1947 से लेकर 2018 तक की फिल्मों में महिलाओं को हर भूमिका में फिल्माया गया है वह एक घरेलू कामकाजी महिला के रूप में हो या फिर एक सशक्त चरित्र वाली महिला के रूप में। इस शोध पत्र में हम ऐसी ही कई चुनिंदा फिल्मों पर विचार करेंगे जिसने समाज में महिलाओं को हर प्रकार से सशक्त किया है।

इसी श्रृंखला में सन् 1947 में बनी "मदर इंडिया" में पहले महिला को एक अबला नारी के रूप में दिखाकर बाद में उसके दबंग रूप को दर्शाया गया है।

वहीं, "मिर्च मसाला" फिल्म सन् 1987 में आई जिसमें अभिनेत्री की भूमिका मुखिया की पत्नी की है जो अपनी बेटी को शिक्षित करने के इच्छा के विरूद्‌ध अपने पति के अत्याचारों के विरूद्‌ध विद्रोह करती है।

वहीं, सन् 2000 में आई फिल्म "अस्तित्व" भारतीय समाज की पुरूषवादी संस्कृति को उजागर करती है। यह समाज में प्रचलित विवाहेतर संबंधों और वैवाहिक दुर्व्यव्हारों जैसे मुद्‌दों को खुलासा करती है। इस मुद्‌दे पर कभी कोई खुलकर बात नहीं करता था।

वहीं, सन् 1994 में आई "बैडेट क्वीन" फिल्म फूलन देवी के जीवन पर आधारित जीवनी है जिसमें उसे 1983 में जेल भेजा गया उसपर पुलिस द्‌वारा मुकदमा चलाया गया और लोगों द्‌वारा किंवदंती में बदल दिया गया। यह एक ऐसी महिला की कहानी है जो पुलिस से लेकर गुंडों तक सभी पुरूषों के अत्याचारों के खिलाफ खड़ी उठती है और एक मजबूत महिला के रूप में खड़े उतरते हैं।

सन् 2004 में आई फिल्म "मैरी कॉम" एक महिला खिलाड़ी के जीवन पर आधारित है। जिसमें स्थानीय जिम में प्रशिक्षण से लेकर राष्ट्रीय चैंपियन बनने तक के उनके सफर को दिखाया गया है। यह को सशक्त करने की कहानी थी।

सन् 2001 में आई "चांदनी बार" फिल्म में अंडरवर्ड, वैश्यावृत्ति, डांस बार और अपराध के जाल में फंसी मुंबई की कई महिलाओं के अंधेरे और असहाय जीवन को प्रकाश डाला गया है। इस फिल्म में अभिनेत्री अपने बच्चों का भविष्य बनाने के लिए कड़ी मेहनत करती है और परिस्थितियाँ भी उन्हें बेहतर देने का प्रयास करती हैं।

सन् 2012 में आई "इंग्लिश विंग्लिश" एक मेहनती गृहणी की कहानी है। इस फिल्म में महिला अभिनेत्री अपने कार्य को पूरी निष्ठा से करती है लेकिन उसका पति और बेटी उसे उसको अंग्रेजी नहीं आने की वजह से उसे हर बार नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। जिसके बाद वह अमेरिका जाकर अंग्रेजी भाषा को सीखती है और अपने प्रति अपने परिवार का नजरिया बदल देती है।

सन् 2016 में आई "डियर जिंदगी" फिल्म में एक ऐसी लड़की की कहानी है जो सिनमेटोग्राफर बनना चाहती है और अपनी फिल्म स्वयं बनाना चाहती है। जिसमें उसे अपने बॉयफ्रेड से धोखे मिलने के बाद

डिप्रेशन में चली जाती है जिसके बाद वह फिल्म के मुख्य किरदार से मिलती है जो उसे इससे बाहर निकलने के तरीके उसे बताता है जिसके बाद अपनी एक शॉर्ट फिल्म को पूरा कर लेती है।

सन् 2016 "नीरजा" यह फिल्म फ्लाइट पार्सर नीरजा भनोट के जीवन पर आधारित है जिन्होंने फ्लाईट हाईजैक होने के बाद 539 यात्रियों और चालक दल की जान बचाई और बचाने में नीरजा की मौत हो गई।

सन् 2018 में आई फिल्म "राजी" जिस फिल्म में देश के प्रति देशप्रेम की भावना को प्रदर्शित करती है जिसमें अभिनेत्री अपने पिता के कहने पर पाकिस्तानी सैन्य अधिकारी के परिवार में शादी करती है ताकि वह कुछ महत्वपूर्ण जानकारी भारत को बता सके।

सन् 1947 से लेकर 2018 तक फिल्मों में महिलाओं की भूमिका और उनके चित्रण की बात की जाए को महिलाओं को सशक्त करने के रूप में ही चित्रित किया गया है। साथ ही मुख्य नायिका के रूप में महिला को फिल्मों में दर्शाया गया है। इन सब बदलावों को ध्यान में रखें तो सिनेमा ने महिलाओं का सामाजिक-सांस्कृतिक स्वरूप तो बदला ही है साथ ही सिनेमा का स्वरूप भी बदल कर रख दिया है। पहले महिलाओं के प्रति सिनेमा इतने खुले विचारों से फिल्मों का प्रदर्शन नहीं कर सकता था लेकिन जैसे-जैसे समाज में बदलाव आया है वैसे ही सिनेमा में महिलाओं की स्थिति में भी दिन प्रतिदिन बदलाव आए हैं।

निष्कर्ष

भारतीय सिनेमा में 1947 से लेकर अबतक काफी बदलाव देखने को मिले हैं। महिलाओं की भारतीय सिनेमा में चित्रण की बात की जाए तो महिलाओं को पहले से लेकर अब तक एक फिल्मों में एक आकर्षण बिंदु के रूप में पेश किया जाता रहा है। जैसे ही फिल्में पश्चिमी सभ्यता के संपर्क में आई हैं तो समाज ने दोनों तरफ के परिवर्तन आए हैं जिसमें एक तरफ तो महिलाओं पर आधारित फिल्में उन्हें समाज में सशक्त बनाती हैं तो वहीं दूसरी ओर उन्हें समाज में पुरूष निर्देशन के अनुसार ही काम करना पड़ता है। लेकिन कई सारी फिल्में ऐसी बनी हैं जिनमें महिलाओं के सकारात्मक पहलू को दिखाया गया कि महिला समाज में अबला के रूप में जरूर रहती है लेकिन समय आने पर समाज को खुद का परिचय देने और अपने वजूद को बताने में भी उसे समय नहीं लगता है। कई फिल्मों में उसे मुख्य नायिका के रूप में फिल्माया गया है। समय के साथ फिल्मी दुनिया में तकनीकी रूप से परिवर्तन तो आए हैं लेकिन महिलाओं के परिपेक्ष्य में थोड़ा और परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। जिससे समाज में महिला अभिनेत्रियों के विषय में फैली धारणाओं को भी खत्म किया जा सके।

संदर्भ सूची

- Laura Mulvey (1988), 'Visual Pleasure and Narrative Cinema'. In Con stance Penley (ed), Feminism and Film Theory, New York: Routledge
- Mahmood, S & Mitra, M (2011), Bollywood sets sights on wider market. BBC Asian Network, 24 June 2011. Retrieved from http://www.bbc. co.uk/news/business-13894702
- Singh, Indubala (2007). Gender Relations and Cultural Ideology in Indian Cinema: A Study of Select Adaptations of Literary Texts, Deep & Deep Publications.
- Ahmed, S. Akbar (1992). 'Bombay Films: The Cinema as Metaphor for Indian Society and Politics'. Modern Asian Studies 26, 2 (I992), pp. 289-320. Great Britain.
- https://www.thaiscience.info/journals/Article/SUIJ/10969014.pdf